हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A. I

विषय – आदिकाल की प्रवृत्तियों का शेष भाग

सामाजिक स्थिति – युद्ध के कारण जनता का धर्म की ओर जनता का धर्म की ओर पलायन हुआ। धर्म के भ्रम के कारण उनमें असंतोष और अंधविश्वास था। उच्चवर्ग के लोग

भोग - विलास का जीवन व्यतीत कर रहे थे तो निम्न वर्ग के लोगों में शिक्षा का पूरा अभाव था। सती - प्रथा का साम्राज्य कायम था। जनता में मानसिक शांति के लिए काव्य-रचना की सामग्री करनी होती थी।

सांस्कृतिक परिस्थितियाँ – आदिकाल के प्रारम्भ में भारतीय संस्कृति उच्च स्तर पर थी। जब भक्तिकाल को उसने अपना दायित्व सौंपा, त मुस्लिम संस्कृति के स्वर्ण - शिखर स्थापित

होने लगे थे। मुस्लिम संस्कृति के प्रवेश के समय यहाँ की विभिन्न जातियाँ मतों, आचारों-विचारों आदि में दीर्घकाल से चली आती हुई समन्वय की व्यापक भावना पूर्णता को पहुँच रही थी। हर्षवर्द्धन के समय संगीत, चित्र-मूर्ति तथा स्थापत्य कला में जातीय गौरव की अभिव्यक्ति हो रही थी। भुवनेश्वर, खजुराहो, पुरी, सोमनाथ, कांजी तथा तंजोर में अनेक भव्य मंदिरों की स्थापना हुई थी। अरब इतिहासकार 'अलबरूनी' ने लिखा है "वे (हिन्दू) कला के अत्यंत उच्च सोपान पर आरोहण कर चुके थे। हमारे लोग (मुसलमान) जब मंदिर देखते थे तो आश्चर्य-चकित हो जाते थे"

गुरुवार 18

अतः आदिकाल की भारतीय संस्कृति उत्कर्ष प्राप्त, निजी परम्परा के ह्रास तथा उ में सम्मिश्रण की ऐसी कहानी है जिसमें कला चेतना और जीवन स्वरूप बहुत कम मिल

साहित्यिक वातावरण — साहित्यिक सर्जना की

धाराएँ थीं। संस्कृत साहित्य एक परम्परा के साथ विकसित होता जा रहा था। दूसरी धारा प्राकृत तथा अपभ्रंश में लिखे जाने वाले साहित्य की थी, तो हिन्दी भाषा में लिखा जाने वाला साहित्य तीसरी धारा थी। उन दिनों कन्नौज तथा कश्मीर संस्कृत का केन्द्र था। ज्योतिष-दर्शन तथा स्मृति आदि विषयों पर टीकाएँ लिखी जा रही थीं। नाटक, कविता, समीक्षा आदि के क्षेत्र में भवभूति, राजेश्वर, अभिनवगुप्त आदि विद्वान थे। शंकर, भास्कर, रामानुज आदि आचार्य संस्कृत साहित्य के सृजन कर रहे थे। जैन आचार्य मध्यप्रदेश के पश्चिम सीमान्त क्षेत्र में प्राकृत, अपभ्रंश तथा पुरानी हिन्दी में संस्कृत के पुराण कथाओं को लेकर नये-नये रूप में प्रस्तुत कर रहे थे।

सोमवार

इन परिस्थितियों के फलस्वरूप निम्नलि प्रवृत्तियों का उदय हुआ — ① इस काल की पहल साहित्यिक प्रवृत्ति उपदेश-प्रधान तथा सदाचा कर्मयोग की महिमा को प्रचारित करनेवाली र रचना प्रस्तुत करने की थी। इस प्रवृत्ति के में बौद्ध, नाथ, सिद्ध और जैन मुनिगण थे

उनका उद्देश्य रस सृष्टि नहीं था। तथापि उनके साहित्य को नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि उन साहित्य ने मनुष्य को रूढ़िग्रस्त, धर्म-भावना से मुक्त किया।

(2) दूसरी प्रवृत्ति वीर-चरित काव्य की है। चरित काव्यों में राज-स्तुति, युद्ध तथा विवाहादि का वर्णन है। वीर-रस के साथ-साथ शृंगार का भी उसमें अच्छा सम्मिश्रण मिलता है।

(3) तीसरी प्रवृत्ति चरित काव्यों को भी धार्मिक रंग देने की थी। चन्द ने अपने काव्य में अवतार चरित का वर्णन कर पृथ्वीराज रासो को भागवत स्वरूप

शुक्रवार 26

बताकर कहानी में धार्मिकता का रंग चढ़ा दिया है।

(4) चौथी प्रवृत्ति फुटकल पदों तथा पहेलियों की थी। अमीर खुसरो की पहेलियाँ तथा विद्यापति की पदावली इसका उदाहरण है।

(5) इस काल की पाँचवी प्रवृत्ति के रूप में लौकिक-रस की रचना करने की बात स्वीकारी जा सकती है। इस दृष्टि से 'संदेश रासक' तथा 'स्वयंभू' चन्द का उल्लेख किया जा सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि उस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ का प्रस्फुटन ही उस काल की विशेषताएँ हैं, क्योंकि उस अशांति में साहित्य की सर्वोन्मुखी उन्नति असम्भव थी।